

# यात्रा आमंत्रण

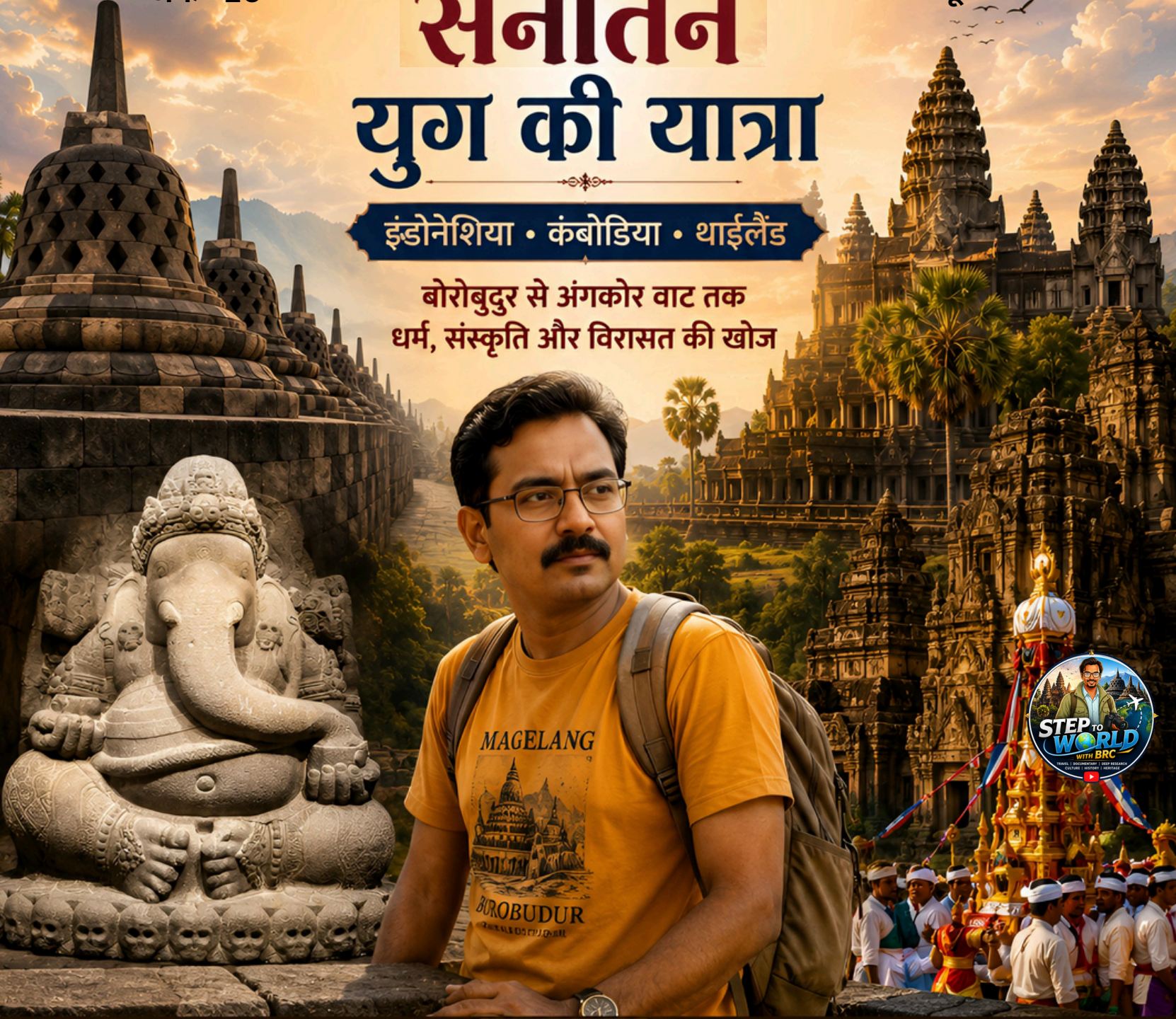
अंक - 20

मूल्य -100 रुपये

## सनातन युग की यात्रा

इंडोनेशिया • कंबोडिया • थाईलैंड

बोरोबुदुर से अंगकोर वाट तक  
धर्म, संस्कृति और विरासत की खोज



### विशेष लेख

#### बोरोबुदुर

बुद्ध की करुणा  
और वास्तुकला  
का अद्भुत संगम



#### प्रांबानन

रामायण की गाथा  
पत्थरों में  
अमर



#### अंगकोर वाट

विश्व की सबसे  
भव्य धार्मिक  
धरोहर



#### कोह छेर

शिव की रहस्यमयी  
नगरी का  
अन्वेषण



#### बाली

क्या अपनी  
पहचान खोता  
जा रहा है?



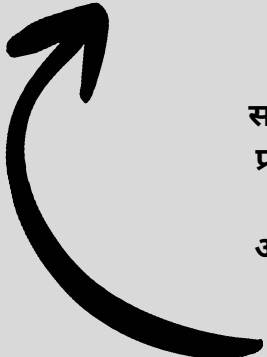
#### इंडायिन उत्सव

थाई संस्कृति की  
आस्था और  
परंपरा





यह 16वीं सदी का बुद्ध का कांस्य सिर है, जिसे आम तौर पर "रहस्यमयी बुद्ध सिर" कहा जाता है। यह कलाकृति मूल रूप से थाईलैंड के अयुथ्या में स्थित वाट फ्रा सी सनफेट के विहार (मठ) में मिली थी।



बैंकॉक के संग्रहालय में प्रदर्शित यह बुद्ध प्रतिमा केवल एक धार्मिक मूर्ति नहीं, बल्कि सभ्यताओं के संवाद का प्रतीक है। 1909 में निर्मित इस प्रतिमा की कला पर गांधार शैली का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, जिसकी जड़ें वर्तमान पाकिस्तान और अफगानिस्तान के प्राचीन बौद्ध केंद्रों में थीं। राजा राम पंचम की परिकल्पना और एक इतालवी मूर्तिकार मिस्टर अल्फोंसो के शिल्प कौशल से निर्मित यह प्रतिमा दर्शाती है कि बुद्ध की विरासत सीमाओं से परे जाकर एशिया और विश्व की साझा सांस्कृतिक धरोहर बन चुकी है।

# सम्पादकीय

“इंडोनेशिया, कंबोडिया और थाईलैंड की यह यात्रा मेरे लिए केवल नए देशों को देखने का अवसर नहीं था, बल्कि सनातन संस्कृति की उस विरासत को करीब से समझने का अनुभव था, जिसने सदियों पहले पूरे दक्षिण-पूर्व एशिया को प्रभावित किया। अंगकोर वाट, प्रांबानन, बोरोबुदुर और बाली की धरती पर भगवान शिव, विष्णु, ब्रह्मा और गणेश की उपस्थिति देखकर बार-बार ऐसा लगा मानो मैं किसी पराए देश में नहीं, बल्कि अपनी ही सांस्कृतिक धरोहर के बीच खड़ा हूँ।

इस विशेषांक में मैंने अपने प्रत्यक्ष अनुभवों, शोध और ऐतिहासिक तथ्यों के माध्यम से उन सांस्कृतिक सूत्रों को खोजने का प्रयास किया है जो भारत को दक्षिण-पूर्व एशिया से जोड़ते हैं। आशा है कि यह यात्रा-वृत्तांत आपको केवल मंदिरों और स्मारकों तक ही नहीं, बल्कि उस जीवंत संस्कृति तक भी ले जाएगा जिसकी छाप आज भी इन देशों के जनजीवन में दिखाई देती है।

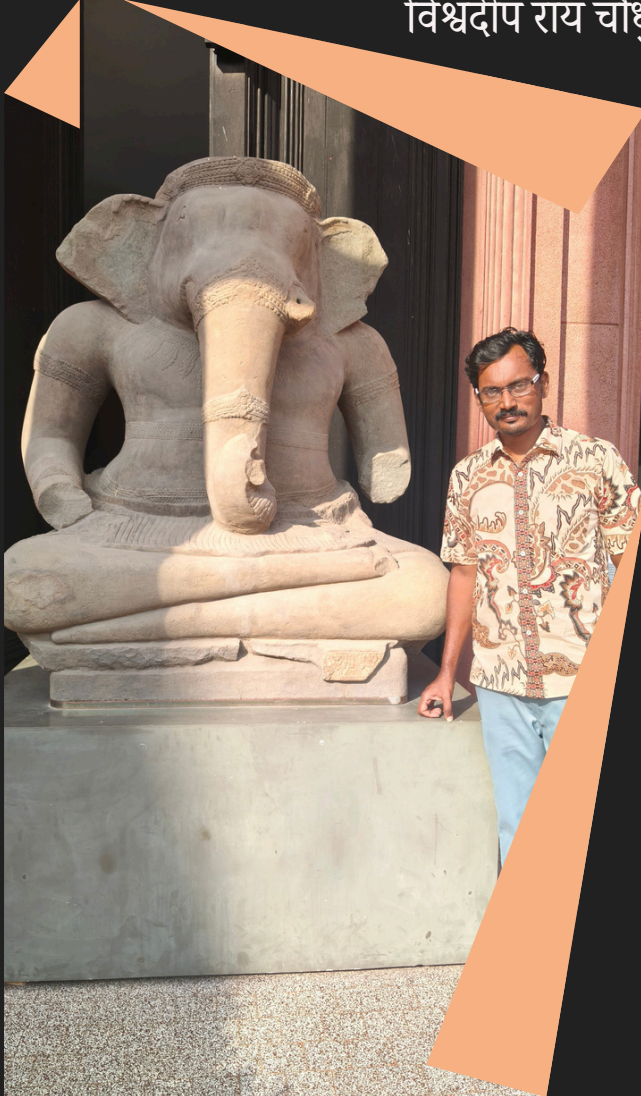
एक और महत्वपूर्ण बात—अब यात्रा आमंत्रण के माध्यम से आप इंडोनेशिया, कंबोडिया, थाईलैंड, मलेशिया, सिंगापुर, ताइवान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों की यात्रा की योजना भी बना सकते हैं। हमारी अनुभवी ट्रेवल पार्टनर टीम आपके लिए विश्वसनीय टूर पैकेज तैयार करेगी, जबकि एक यात्रा पत्रकार के रूप में मैं स्वयं यह सुनिश्चित करने का प्रयास करूंगा कि आपको केवल पर्यटन स्थल ही नहीं, बल्कि उन देशों की संस्कृति, इतिहास और वास्तविक पहचान को भी करीब से देखने का अवसर मिले।

यदि आप दक्षिण-पूर्व एशिया की यात्रा की योजना बना रहे हैं, तो मुझसे सीधे संपर्क कर सकते हैं।

ईमेल: [yatraamantran@gmail.com](mailto:yatraamantran@gmail.com)

व्हाट्सएप: 7350851852

## विश्वदीप रॉय चौधुरी - संपादक




संपादकीय टीम  
संपादक  
ग्राफ़िक डिज़ाइनर  
बिस्वदीप रॉयचौधुरी  
सलाहकार  
गौर कंजीलाल  
वरिष्ठ संवाददाता  
सुहासिनी साकिर  
उत्तरप्रदेश ब्यूरो प्रमुख

प्रताप सिंह  
सांगली संवाददाता  
गणेश घुंटे  
दिल्ली टीम  
कापिल अत्री  
दीपक शर्मा  
शंकर सिंह कोरंगा  
मोहन जोशी  
भावना अत्री  
यूरोप संवाददाता  
चेतन वाधेर

सोशल मीडिया पोस्ट प्रोडक्शन  
विकांत रंजन  
मुंबई टीम  
नरेंद्र पाटिल/ नितिन कालजे  
पता:

189/10, सेक्टर एक, चर्कोप,  
कांदिवली (पश्चिम), मुंबई  
हमारा अनुसरण करें:

@yatramantran   
हमारी वेब साइट पर जाएं:

[www.willindiachange.org](http://www.willindiachange.org)  
[www.yatramantran.com](http://www.yatramantran.com)  
हमारे यूट्यूब चैनल को सब्सक्राइब करें:

यात्रा आमंत्रण  
Step to World with BRC

एक आध्यात्मिक यात्रा...

भारत से जावा तक  
आरह पार बौद्ध शरोवर की कहानी

# महायान बुद्ध के पदचिन्ह बोरोबुदुर मंदिर

पत्थरों में छिपा ज्ञान का महासागर



महायान बौद्ध धर्म  
का महान प्रतीक



मंडल संरचना में  
बना अद्वैत स्मारक



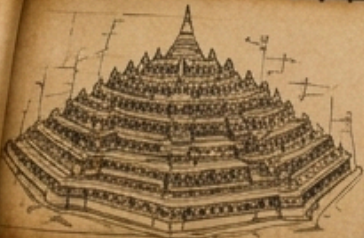
बुद्धत्व की यात्रा  
पत्थरों में अंकित



1200+ वर्ष पुराना  
रहस्य और इतिहास



COMING  
SOON



## बोरोबुदुर का रहस्य

- 9 स्तर = ज्ञान की 9 सीढ़ियों
- 504 बुद्ध प्रतिमाएँ
- 1460 उत्कीर्ण पेनल
- जीवन से निर्वाण तक की आध्यात्मिक यात्रा



“ यह मंदिर नहीं,  
बुद्ध के मार्ग की  
जीवंत अनुभूति है। ”

बोरोबुदुर मंदिर, मध्य जावा में, सबसे नज़दीकी शहर मागेलांग से 17.4 km दूर और योग्याकार्ता शहर से लगभग 40 km उत्तर-पश्चिम में स्थित है।

यह दो नदियों (प्रोगो और सिलेंग) के बीच और, दुर्भाग्य से, दो जुड़वां ज्वालामुखियों (उत्तर-पूर्व में मेरापी-मेरबाबू और उत्तर-पश्चिम में सुंदोरो-सुम्बिंग) के बीच स्थित है।

यह स्मारक थोड़ी ऊँची जगह पर बनाया गया था और समुद्र तल से 265m की ऊँचाई पर स्थित है। इसके आस-पास का हरा-भरा 'केडू मैदान' एक बहुत ही उपजाऊ कृषि क्षेत्र है और इसे 'जावा का बगीचा' कहा जाता है। बोरोबुदुर का निर्माण लगभग 750 ईस्वी में शुरू हुआ था, जब शैलेंद्र राजवंश का मताराम साम्राज्य पर शासन अपने चरम पर था; यह साम्राज्य श्रीविजयन साम्राज्य के भारी प्रभाव में था। पहली गैलरी की दीवार पर बने 120 पैनलों में बुद्ध की जीवनी दिखाई गई है। कहानी बुद्ध के तुषित स्वर्ग से धरती पर आने से शुरू होती है और बनारस के पास 'डियर पार्क' में उनके पहले उपदेश के साथ समाप्त होती है। कर्म के नियम को दर्शाने वाले 160 छिपे हुए पैनल ज़्यादातर स्मारक के छिपे हुए आधार पर स्थित हैं।



शैलेंद्र राजवंश के शासकों ने दुनिया के सबसे बड़े महायान बौद्ध मंदिर का निर्माण किया था। पहली नज़र में, इसकी बनावट पिरामिड जैसी लगती है। लेकिन इसे चैत्य, स्तूप और पवित्र पर्वत भी कहा जाता है। ऊपर से देखने पर, बोरोबुदुर एक मंडला की आकृति जैसा दिखता है जो बोधिसत्व की यात्रा को दर्शाता है: एक बोधिसत्व संसार से अपनी यात्रा शुरू करता है और दूसरों की आध्यात्मिक यात्रा में मदद करने के लिए निर्वाण प्राप्त करने से खुद को रोकता है। 1949 में – इंडोनेशिया की आज़ादी के ठीक बाद – इंडोनेशिया ने संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (UNESCO) के साथ सहयोग करने का फैसला किया, जिसके परिणामस्वरूप 1973 में अंतरराष्ट्रीय मदद से इसकी पूरी तरह से मरम्मत शुरू हुई। इस बड़े पैमाने पर की गई मरम्मत में 6,901,243 अमेरिकी डॉलर का खर्च आया। मध्य जावा में स्थित इस मंदिर में मरम्मत का पहला चरण डच औपनिवेशिक काल के दौरान 1907 और 1911 के बीच पूरा किया गया था। इस मरम्मत कार्य का नेतृत्व थियोडोर वैन एर्प ने किया था, लेकिन उन्होंने बहुत कम रिकॉर्डिंग या दस्तावेज़ीकरण किया। बोरोबुदुर मंदिर का बहुत महत्व है क्योंकि इंडोनेशिया के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक होने के साथ-साथ (यहाँ हर साल लगभग 40 लाख पर्यटक आते हैं), इस मंदिर का इस्तेमाल आज भी बौद्ध धर्म से जुड़े विभिन्न धार्मिक समारोहों के लिए किया जाता है। हर साल वैशाख दिवस – जिसे बुद्ध दिवस के रूप में भी जाना जाता है – मनाया जाता है। इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए पूरे इंडोनेशिया से कई पर्यटक आते हैं। साथ ही, अंतरराष्ट्रीय मेहमान भी इस दिन शामिल होते हैं। इंडोनेशियाई सरकार द्वारा आठ साल तक चली मरम्मत के बाद, राष्ट्रपति सुहार्तो ने 1983 में बोरोबुदुर मंदिर को आधिकारिक तौर पर फिर से खोला। UNESCO के मरम्मत प्रोजेक्ट ने बोरोबुदुर के वैश्विक महत्व को बढ़ाया और राष्ट्रपति सुहार्तो ने इसे न केवल इंडोनेशिया का स्मारक, बल्कि पूरी मानवता के लिए एक धरोहर बताया। लेकिन 1985 में, इस्लामी आतंकवादियों ने 8वीं सदी के बोरोबुदुर बौद्ध मंदिर में 11 बम लगाए। बोरोबुदुर में बमबारी की यह घटना इंडोनेशिया में बढ़ते धार्मिक तनाव के माहौल में हुई थी, जब सरकार इस्लामी कट्टरपंथ के खिलाफ सख्त कार्रवाई कर रही थी। लगभग दो महीने की जांच के बाद भी कोई ठोस नतीजा नहीं निकला; अधिकारियों ने लगभग 50 लोगों से पूछताछ की, जिन्हें बाद में सबूतों की कमी के कारण छोड़ दिया गया। मामले में तब बड़ी कामयाबी मिली जब बान्युवांगी में 'पेमुडी एक्सप्रेस' बस में धमाका हुआ। इसके बाद अब्दुलकादिर अली अल-हबसी को गिरफ्तार किया गया, जिससे अपराधियों के नेटवर्क का पता लगाने में मदद मिली। इस नेटवर्क में अछमद मुलादाविला और अब्दुलकादिर ब्राजा भी शामिल थे, जिन्हें बाद में गिरफ्तार कर लिया गया। अधिकारियों ने हुसैन अली अल-हबसी और इब्राहिम जवाद की भी इस हमले में मुख्य भूमिका होने की पहचान की।



बोरोबुदुर में बनी उभरी हुई नक्काशी (bas-reliefs) में 8वीं सदी के प्राचीन जावा के राजमर्रा के जीवन के कई दृश्य दिखाए गए हैं— राजमहल के जीवन से लेकर जंगल में रहने वाले साधुओं तक, और गाँव में रहने वाले आम लोगों तक के दृश्य इसमें शामिल हैं। इसमें मंदिर, बाज़ार, तरह-तरह के पेड़-पौधे और जीव-जंतु, और साथ ही वहाँ की स्थानीय वास्तुकला को भी दर्शाया गया है। यहाँ जिन लोगों को दर्शाया गया है, उनमें राजा, रानी, राजकुमार, रईस, दरबारी, सैनिक, नौकर, आम लोग, पुजारी और साधु शामिल हैं। इन नक्काशी में बौद्ध मान्यताओं के अनुसार कुछ पौराणिक और आध्यात्मिक जीवों को भी दिखाया गया है, जैसे—असुर, देवता, बोधिसत्व, किन्नर, गंधर्व और अप्सराएँ। इन नक्काशी में बनी तस्वीरें अक्सर इतिहासकारों के लिए कुछ खास विषयों पर शोध करने का एक संदर्भ (reference) बन जाती हैं; जैसे—8वीं सदी के समुद्री दक्षिण-पूर्व एशिया की वास्तुकला, हथियार, अर्थव्यवस्था, पहनावा और यातायात के साधनों का अध्ययन करना। 8वीं सदी के दक्षिण-पूर्व एशिया के एक 'डबल आउट्रिगर' जहाज़ का जो सबसे मशहूर चित्रण मिलता है, वह 'बोरोबुदुर जहाज़' का चित्रण है।

इंडोनेशिया के मध्य जावा में स्थित बोरोबुदुर दुनिया का सबसे बड़ा बौद्ध स्मारक माना जाता है। यह विशाल मंदिर एक पहाड़ी की चोटी पर बना है, जिसके चारों ओर घने जंगल और कई ज्वालामुखी हैं। इनमें से एक ज्वालामुखी आज भी सक्रिय है। प्राकृतिक सौंदर्य और आध्यात्मिक वातावरण से घिरा यह स्मारक दक्षिण-पूर्व एशिया की सबसे अनमोल धरोहरों में गिना जाता है।

लगभग 1,200 वर्ष पहले निर्मित इस स्मारक के निर्माण में स्थानीय नदियों और झरनों से लाए गए करीब 20 लाख पत्थरों का उपयोग किया गया था। आश्चर्य की बात यह है कि इन पत्थरों को बिना किसी मसाले (मोर्टार) के एक-दूसरे से जोड़कर लगभग 95 फुट (29 मीटर) ऊँचा सीढ़ीदार पिरामिड बनाया गया। मंदिर परिसर में बुद्ध की 500 से अधिक प्रतिमाएँ स्थापित हैं। बोरोबुदुर की सबसे बड़ी विशेषता इसकी अद्भुत नक्काशी है। इसके निचले भागों में लगभग 3,000 उभरी हुई शिल्पाकृतियाँ (बेस-रिलीफ) हैं, जो भगवान बुद्ध के जीवन, उनकी शिक्षाओं और बौद्ध दर्शन की कहानियों को दर्शाती हैं। यह दुनिया में बौद्ध कला और मूर्तिकला का सबसे बड़ा संग्रह माना जाता है।

बोरोबुदुर पर चढ़ना केवल एक शारीरिक यात्रा नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक तीर्थयात्रा भी है। महायान बौद्ध परंपरा के अनुसार श्रद्धालु जैसे-जैसे एक स्तर से दूसरे स्तर की ओर बढ़ते हैं, वे प्रतीकात्मक रूप से अज्ञान से ज्ञान और अंततः ज्ञानोदय की ओर अग्रसर होते हैं। मंदिर की प्रत्येक मंज़िल जीवन और चेतना के एक नए स्तर का प्रतिनिधित्व करती है।

इस भव्य स्मारक का निर्माण आठवीं और नौवीं शताब्दी में शैलेंद्र राजवंश के स्वर्णकाल में हुआ था। उस समय शैलेंद्र शासकों का प्रभाव जावा और पड़ोसी सुमात्रा तक फैला हुआ था। माना जाता है कि यह राजवंश दक्षिण भारत या इंडोचीन क्षेत्र से आया था और इसी के संरक्षण में जावा बौद्ध शिक्षा, दर्शन और पूजा का प्रमुख केंद्र बना।



सदियों तक बोरोबुदुर तीर्थयात्रियों और यात्रियों को आकर्षित करता रहा। यहाँ मिले चीनी सिक्के और मिट्टी के बर्तन इस बात का प्रमाण हैं कि 15वीं शताब्दी तक यहाँ लोगों का आना-जाना जारी था। आज भी दुनिया भर से हजारों श्रद्धालु और पर्यटक यहाँ पहुँचते हैं।

हालाँकि 16वीं शताब्दी तक यह स्मारक रहस्यमय ढंग से वीरान हो गया। जावा का राजनीतिक और सांस्कृतिक केंद्र पूर्व दिशा की ओर स्थानांतरित हो गया था, वहीं 13वीं और 14वीं शताब्दी में द्वीप पर इस्लाम के प्रसार ने भी परिस्थितियाँ बदल दीं। समय के साथ ज्वालामुखियों की राख ने मंदिर को ढक लिया और घने जंगलों ने इसे अपनी गिरफ्त में ले लिया। धीरे-धीरे यह महान स्मारक लोगों की स्मृतियों से लगभग ओझल हो गया।

19वीं शताब्दी की शुरुआत में जावा के ब्रिटिश गवर्नर सर थॉमस स्टैमफोर्ड रैफल्स को इस स्थल की जानकारी मिली। उनके प्रयासों से यहाँ खुदाई शुरू हुई और बोरोबुदुर एक बार फिर दुनिया के सामने आया। लेकिन इस दौरान कई समस्याएँ भी पैदा हुईं। स्थानीय लोगों ने निर्माण सामग्री के लिए पत्थर निकाल लिए और कई संग्रहकर्ताओं ने बुद्ध प्रतिमाओं तथा अन्य मूल्यवान वस्तुओं को अपने निजी संग्रहों में शामिल कर लिया।

सौभाग्य से बाद में इस धरोहर के संरक्षण के लिए बड़े पैमाने पर प्रयास शुरू किए गए। इंडोनेशिया सरकार और यूनेस्को ने 1968 में "सेव बोरोबुदुर" अभियान शुरू किया, जिसे दुनिया की सबसे बड़ी अंतरराष्ट्रीय संरक्षण परियोजनाओं में से एक माना जाता है।

इस अभियान के दौरान मंदिर के निचले हिस्सों को सावधानीपूर्वक अलग किया गया, लाखों पत्थरों की सफाई की गई और नक्काशीदार पैनलों को मौसम के प्रभाव से बचाने के लिए विशेष संरक्षण दिया गया। साथ ही पानी की निकासी के लिए एक आधुनिक व्यवस्था बनाई गई, जिससे कटाव और क्षरण को रोका जा सके। आठ वर्षों से अधिक समय तक चले इस कार्य में लगभग दस लाख पत्थरों को हटाकर दोबारा उनकी मूल स्थिति में स्थापित किया गया।

आज बोरोबुदुर फिर से अपनी पुरानी भव्यता के साथ खड़ा है। लगभग 1,200 वर्ष पुराना यह स्मारक न केवल बौद्ध धर्म की महान परंपरा का प्रतीक है, बल्कि मानव कौशल, कला और आध्यात्मिकता का अद्भुत उदाहरण भी है। दक्षिण-पूर्व एशिया की धरोहरों में इसका स्थान अत्यंत विशिष्ट और गौरवपूर्ण है।





इंडोनेशिया का राष्ट्रीय संग्रहालय, जकार्ता



अंगकोर वाट, सिएम रीप, कंबोडिया



लिंगपुरा, कोह केर, कंबोडिया



बोरोबुदुर मंदिर, योग्यकार्ता



yatramantran



—❧— एक मंदिर, दो धर्म, एक विरासत —❧—

# अंगकोर वाट

## विष्णु से बुद्ध तक की यात्रा

♦ इतिहास ♦ स्थापत्य ♦ रहस्य ♦ सांस्कृतिक विरासत



विष्णु का मंदिर



बुद्ध का तीर्थ

भारतीय सहयोग,  
विश्व धरोहर की सुरक्षा

इंदिरा गांधी के नेतृत्व में भारत ने  
अंगकोर वाट संरक्षण में महत्वपूर्ण  
भूमिका निभाई और इस धरोहर को  
विश्व के लिए संरक्षित रखने में योगदान दिया:



"INDIA'S GIFT TO CAMBODIA,"  
A HERITAGE FOR HUMANITY"



दुनिया का सबसे बड़ा  
धार्मिक स्मारक



इंबियनॉक्स का  
अदृष्ट रहस्य



बैयॉन स्थापत्य  
की अनोखी कला



अप्सराओं की  
अलौकिक सुंदरता



# अंगकोर की विरासत मंदिरों का मायाजाल

1953 में फ्रांस से आजादी मिलने के बाद से ही, अंगकोर वाट के नाम से जाने जाने वाले इस 12वीं सदी के मंदिर की तस्वीरें कंबोडिया के हर झंडे पर दिखाई देती रही हैं। कंबोडिया दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है जो अपने झंडे पर किसी खंडहर की तस्वीर दिखाता है, और "अंगकोर" कंबोडिया की पहचान का एक अहम हिस्सा है।



जयवर्मन VIII - अंगकोर नेशनल म्यूजियम, सियाम रेओप, बायोन शिल्पकला के तहत निर्मित, 12 सदी

अंगकोर वाट वास्तुकला का एक शानदार नमूना और दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक स्मारक है - यह वेटिकन सिटी से चार गुना बड़े इलाके में फैला हुआ है। इसे 12वीं सदी की शुरुआत में, लगभग 1110-1150 के बीच खमेर राजा सूर्यवर्मन द्वितीय ने बनवाया था, जिससे अंगकोर वाट लगभग 900 साल पुराना हो गया है।

खमेर साम्राज्य की राजधानी में बने इस मंदिर परिसर को बनाने में लगभग 30 साल लगे। 12वीं सदी के आखिर तक बौद्ध मंदिर बनने से पहले, यह मूल रूप से हिंदू देवता विष्णु को समर्पित था। दसवीं और चौदहवीं सदी के बीच, जिस राज्य को हम अंगकोर कहते हैं, उसका मुख्य दक्षिण-पूर्वी एशिया के बड़े हिस्से पर दबदबा था। कंबोडिया की 'ग्रेट लेक' के उत्तर में स्थित इसकी राजधानी यसोदरापुरा में दस लाख से ज्यादा लोग रहते थे, जिससे यह दुनिया के सबसे ज्यादा आबादी वाले शहरों में से एक बन गया था। इसकी दौलत हर दिशा में सैकड़ों मील तक फैले मानव-संसाधन और प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण रखने और एशिया के दूसरे समृद्ध राज्यों के साथ व्यापार करने से आती थी।

"अंगकोर" एक जटिल सभ्यता थी जिसके समाज में राजा सबसे ऊँचे स्थान पर थे। मंदिर बनाने वाले और ऊँचे वर्ग के लिए अनाज उगाने वाले ज्यादातर लोग चावल की खेती करने वाले किसान थे, जो ऐसी तकनीकों का इस्तेमाल करते थे जिनमें आज तक बहुत कम बदलाव हुआ है। खमेर लोग कुशल निर्माता और पत्थर व लकड़ी के काम में माहिर कलाकार भी थे। खमेर इंजीनियरों ने शानदार जलाशय और कंबोडिया के शहरों को जोड़ने वाली सीधी सड़कें बनाईं, और खमेर कवियों ने वे विस्तृत शिलालेख लिखे जो आज भी कई मंदिरों में मौजूद हैं। कंबोडियाई योद्धाओं ने पड़ोसी राज्यों पर हमले किए और हमलावरों से यसोदरापुरा की रक्षा की। जब हम मंदिरों में जाते हैं या कंबोडिया का अदभुत शास्त्रीय नृत्य देखते हैं, तो इनमें से कई "रोज़मरी" के योगदान भुला दिए जाते हैं। हालाँकि, अगर हम खंडहरों के पास रहने वाले कंबोडियाई किसानों के जीवन को देखें, तो हमें एक हजार साल पहले के आम खमेर लोगों के जीवन का कुछ अंदाज़ा हो सकता है।

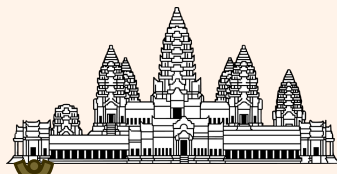
ज्यादातर जानकारों का मानना है कि राजा सूर्यवर्मन द्वितीय का जन्म खमेर राजधानी अंगकोर में 1094 या 1098 ईस्वी में हुआ था। और 1113 तक, जब वे सिर्फ किशोर थे, सूर्यवर्मन ने सत्ता मज़बूत कर ली थी और खुद को राजा घोषित कर दिया था। युवा राजा ऐसे समय में गद्दी पर बैठे जब उनके राज्य की कुछ ताकत कम हो रही थी - एक ऐसा चलन जिसे सूर्यवर्मन पलटने के लिए दृढ़ थे।

राजा सूर्यवर्मन द्वितीय खुद को एक कूटनीतिज्ञ और विजेता दोनों मानते थे, और उन्होंने अपने साम्राज्य को उसकी पुरानी शान वापस दिलाने के लिए दोनों भूमिकाओं को बखूबी निभाया। पूर्व में, सूर्यवर्मन ने चंपा और दार्इ वियत के खिलाफ बार-बार हमले किए, जो दोनों आज के वियतनाम में स्थित थे। हालाँकि, कूटनीति के ज़रिए ही सूर्यवर्मन ने असल में अपनी छाप छोड़ी। वे 300 सालों में चीन में कूटनीतिक प्रतिनिधिमंडल भेजने वाले पहले खमेर राजा थे, जिससे साम्राज्य के उत्तरी पड़ोसियों के साथ संबंध सामान्य हो गए। राजा सूर्यवर्मन द्वितीय के शासनकाल में कला और वास्तुकला के क्षेत्र में भी बड़ी उपलब्धियाँ हासिल हुईं - अंगकोर वाट का निर्माण इसका एक बेहतरीन उदाहरण है।

एक सच्चे हिंदू होने के नाते, राजा ने खमेर राजधानी अंगकोर में हिंदू देवता विष्णु को समर्पित एक विशाल मंदिर बनवाने का आदेश दिया। जिस मंदिर को बाद में अंगकोर वाट के नाम से जाना गया, उसका निर्माण 1122 में शुरू हुआ, और पहली ईंट रखे जाने के समय से लेकर सूर्यवर्मन के सपने को हकीकत में बदलने में लगभग 50,000 मज़दूरों - जिनमें से कई गुलाम थे - को करीब 30 साल लग गए। दुर्भाग्य से, राजा सूर्यवर्मन द्वितीय अपने मज़दूरों की मेहनत का फल देखने के लिए जीवित नहीं रहे।

राजा सूर्यवर्मन द्वितीय की असामयिक मृत्यु 1150 में अन्नाम पर एक असफल हमले के बाद हुई, जो आज मध्य वियतनाम में है। इसके बाद जयवर्मन सप्तम का आगमन हुआ, जिन्होंने - उस समय 50 से अधिक उम्र के होने के बावजूद - खमेर साम्राज्य को वापस पाने और उसे फिर से स्थापित करने के लिए एक सफल अभियान का नेतृत्व किया, और आखिरकार 1181 में जीत हासिल कर खुद को राजा घोषित किया। कई जानकार राजा जयवर्मन द्वितीय के शासनकाल को खमेर साम्राज्य के लिए एक स्वर्णिम युग मानते हैं। साम्राज्य के पहले बौद्ध राजा के रूप में, जयवर्मन ने धीरे-धीरे अंगकोर वाट और अन्य मंदिरों में हिंदू प्रतीकों की जगह बौद्ध कला को शामिल करना शुरू कर दिया।

# अंगकोर वाट की रहस्यमयी अप्सराएँ:



अंगकोर वाट की अलौकिक अप्सराएँ इस मशहूर मंदिर परिसर की सबसे आकर्षक चीजों में से एक हैं, जो अपनी दिव्य मौजूदगी से इसकी दीवारों की शोभा बढ़ाती हैं। बलुआ पत्थर पर खूबसूरती से उकेरी गई ये दिव्य महिला आकृतियाँ आध्यात्मिक प्रतीकवाद, कलात्मक महारत और कंबोडिया की अनोखी सांस्कृतिक विरासत का मेल हैं। अप्सराओं की अवधारणा हिंदू पौराणिक कथाओं से आई है, जहाँ उन्हें देवताओं के राजा इंद्र के स्वर्गीय लोक में रहने वाली दिव्य नर्तकियों या अप्सराओं के रूप में वर्णित किया गया है। हिंदू ग्रंथों के अनुसार, अप्सराओं का जन्म 'क्षीर सागर' (दूध के सागर) के मंथन के दौरान हुआ था, जो अमृत (अमरता का रस) पाने के लिए किया गया एक पौराणिक आयोजन था। अमृत के साथ-साथ, ये दिव्य कन्याएँ भी सागर से निकलीं, जो सुंदरता, शालीनता और सम्मोहित करने की शक्ति का प्रतीक थीं।

अप्सराओं को अक्सर स्वर्गीय दरबारों में संदेशवाहक या मनोरंजन करने वाली के रूप में दिखाया जाता है, जो देवताओं की सेवा करती हैं और नायकों का मार्गदर्शन करती हैं। उनमें इंसानी भावनाओं को प्रभावित करने की शक्ति होती है और वे पानी, उर्वरता और पुनर्जन्म से गहराई से जुड़ी होती हैं। हिंदू कला में, अप्सराओं को आकर्षण और ज्ञान दोनों के प्रतीक के रूप में दिखाया जाता है, जो जीवन की क्षणभंगुर सुंदरता और भक्ति की परिवर्तनकारी शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं।

दक्षिण-पूर्व एशिया में हिंदू धर्म और बाद में बौद्ध धर्म के प्रसार के साथ, अप्सरा की छवि को कंबोडियाई संस्कृति में अपनाया गया, जहाँ यह एक अनोखे कलात्मक और सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में विकसित हुई। कंबोडियाई परंपरा में, अप्सराएँ न केवल दिव्य नर्तकियाँ हैं, बल्कि स्त्री सुंदरता, शालीनता और गरिमा के आदर्शों का भी प्रतिनिधित्व करती हैं, जिससे वे अंगकोरियन कला की एक प्रमुख विशेषता बन गई हैं।

अंगकोर वाट में 1,800 से अधिक अप्सराओं की नक्काशी है, जिनमें से प्रत्येक मुद्रा, पहनावे और भाव-भंगिमा में अनोखी है। ये आकृतियाँ दीवारों, दरवाजों और खंभों की शोभा बढ़ाती हैं, जिससे मंदिर में एक दिव्य उपस्थिति का अहसास होता है। अंगकोर वाट के संदर्भ में, अप्सराओं ने विभिन्न प्रतीकात्मक और आध्यात्मिक भूमिकाएँ निभाईं:

दिव्य मार्गदर्शक: माना जाता था कि अप्सराएँ मृतकों की आत्माओं का स्वर्ग की ओर मार्गदर्शन करती थीं, और वे धरती और स्वर्ग के लोकों के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करती थीं। मंदिर की दीवारों पर उनकी उपस्थिति आध्यात्मिक उन्नति चाहने वालों की यात्रा को सुगम बनाने में मदद करती थी।



## अंगकोर वाट और भारत के साथ सांस्कृतिक संबंध

श्रीमती इंदिरा गांधी का अंगकोर स्मारकों से पहला जुड़ाव 1954 में हुआ था, जब वह अपने पिता और भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ वहां गई थीं।

9 नवंबर 1953 को फ्रांस से आज़ादी मिलने के बाद, कंबोडिया के राजा नोरोडोम सिहानोक को बधाई देने के लिए वहां जाने वाले वह सरकार के पहले प्रमुख थे। इंदिरा गांधी ने स्वाभाविक रूप से उस अपील की अहमियत को समझा और सकारात्मक प्रतिक्रिया दी। कंबोडिया ने वियतनाम के ज़रिए भारत की त्वरित प्रतिक्रिया के लिए अपना आभार व्यक्त किया। रूस में भारत के राजदूत श्री टी.एन. कौल ने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को एक संदेश भेजा, जिसमें उनसे आग्रह किया गया कि स्मारकों के संरक्षण की परियोजना पर अपना बेहतर दावा पेश करने के लिए हमें खुद कुछ करना चाहिए। प्राचीन स्मारकों को विरासत के तौर पर बहुत महत्व देने वाली प्रधानमंत्री ने इस मामले में तुरंत ज़रूरी निर्देश जारी किए। इसलिए, पिछली टीम की सिफारिशों के आधार पर, 1982 में नौ पुरातत्वविदों की एक और टीम को अंगकोर वाट मंदिर पर ध्यान केंद्रित करने और संरक्षण पर एक विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (जिसमें कुल खर्च का ब्योरा भी शामिल हो) सौंपने के लिए भेजा गया। रिपोर्ट में दिए गए सभी प्रस्तावों और सिफारिशों को तुरंत मंजूरी दे दी गई और प्रधानमंत्री ने अंतरराष्ट्रीय महत्व के इस प्रतिष्ठित काम को करने की अपनी उत्सुकता ज़ाहिर की।

राजनीतिक स्तर पर दो देशों के बीच समझौते में कई औपचारिकताओं के कारण लंबा समय लगता है। इसलिए, भारत सरकार द्वारा काम तुरंत शुरू करने के लिए तैयार होने के बावजूद, इसके लिए अंतिम समझौता 1986 की शुरुआत तक लटका रहा। लेकिन जब संरक्षण परियोजना आखिरकार शुरू हुई...



आज अंगकोरवाट आने वाले किसी भी व्यक्ति को यह अंदाज़ा नहीं होगा कि भारतीय विशेषज्ञों के काम शुरू करने से पहले इस गैलरी की हालत क्या थी। ASI के आने से पहले, यह गैलरी और इसकी बेशकीमती नक्काशी (bas-relief) पूरी तरह से मौसम की मार झेल रही थी। ASI के इंजीनियरों और दूसरे कर्मचारियों को इस गैलरी और उससे जुड़े दो गोपुरम (प्रवेश द्वार) और हॉल को ठीक करने और बिखरे हुए हिस्सों को फिर से जोड़ने में तीन साल (1988-91 के दौरान) तक लगातार काम करना पड़ा।

# खोज, रहस्य और मिटाने की कोशिश

अंगकोर वाट की "खोज" करने वाले पहले यूरोपीय फ्रांसीसी वनस्पतिशास्त्री हेनरी मुहोट थे। उन्होंने अपनी डायरी में लिखा कि उन्हें एक ऐसी इमारत मिली है जो "सुलेमान के मंदिर" के बराबर है और जिसे किसी प्राचीन माइकल एंजेलो ने बनाया था। लेकिन यूरोपियों का मानना था कि अंगकोर वाट को कंबोडियाई लोगों के अलावा किसी और ने बनाया होगा, क्योंकि वे उन्हें पिछड़ा, जन्मजात आलसी और निश्चित रूप से घटिया समझते थे।

सदियों से, कई अलग-अलग समूहों - जिनमें थाई और वियतनामी हमलावर, फ्रांसीसी उपनिवेशवादी और खमेर रूज गुरिल्ला शामिल हैं - ने कंबोडिया की प्राचीन जगहों को रौंदा है और हर किसी ने उन्हें नुकसान पहुँचाया है। थाई राजा ने कंबोडिया की संपत्ति लूटी। वह न केवल अपनी राजधानी में मूर्तियाँ ले जा रहा था, बल्कि वह अंगकोर के राजाओं की उस शक्ति को भी छीन रहा था जो इन दिव्य मूर्तियों में निहित थी। सौ साल बाद बर्मा के लोग भी इतने ही चालाक निकले: जब उन्होंने थाईलैंड पर कब्ज़ा किया, तो उन्होंने राजधानी अयुथ्या को लूटा और बदले में अंगकोर की कई मूर्तियाँ ले गए। आखिरकार 1734 में ये मूर्तियाँ मांडले पहुँचीं, जहाँ वे तब से वहीं हैं।

सबसे ज़्यादा लूटपाट 15वीं सदी में सियामीज़ (थाईलैंड) लोगों ने की, जो ज़्यादातर सांस्कृतिक खजाने ले गए। हालाँकि, 20वीं सदी की शुरुआत में लूटपाट का सबसे कुख्यात सुनियोजित अभियान आंद्रे मालराक्स से जुड़ा था - जो बाद में डी गॉल कैबिनेट में फ्रांस के सांस्कृतिक मामलों के मंत्री बने। उन्होंने और उनके साथियों ने मंदिर के बड़े हिस्से हटा दिए और उन्हें देश से बाहर भेज दिया। बाद में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर मुकदमा चलाया गया।

फ्रांस का 17वीं सदी की शुरुआत से लेकर 1960 के दशक तक अलग-अलग रूपों में औपनिवेशिक कब्ज़ा रहा। 19वीं और 20वीं सदी में, ब्रिटिश साम्राज्य के बाद दुनिया में उसका वैश्विक औपनिवेशिक साम्राज्य दूसरा सबसे बड़ा था।

फ्रांसीसियों ने इंडोचाइना में आर्थिक रूप से कभी ज़्यादा आधुनिकीकरण नहीं किया। उन्होंने बस कुशलतापूर्वक कर वसूले, लेकिन कंबोडिया की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कुछ खास बदलाव नहीं आया। फ्रांसीसियों द्वारा गैर-वियतनामी लोगों के साथ भेदभाव जारी रहा, खासकर जब यह पता चला कि इंडोचाइना में कंबोडियाई लोग प्रति व्यक्ति सबसे ज़्यादा कर देते थे। 1916 में, कर के खिलाफ विद्रोह के कारण हज़ारों किसान करों में कटौती की अपील करने के लिए राजा सिसोवथ मोनिवोंग के पास नोम पेन्ह पहुँचे। फ्रांसीसी, जिन्होंने सोचा था कि... कंबोडिया के लोग विरोध करने के लिए बहुत शांत और सुस्त थे, और वे हैरान थे।

15वीं सदी के बाद, दक्षिण-पूर्व एशिया और फिर दक्षिण एशिया में अपनी कॉलोनी बनाने की कोशिश कर रही यूरोपीय ताकतों के दबाव के कारण भारत और कंबोडिया के बीच संपर्क काफी कम हो गया।

वियतनाम युद्ध के दौरान, अमेरिकी जेट विमानों ने अंकोरवाट पर बमबारी की। कंबोडिया के लोगों का कहना है कि अंकोरवाट में कोई विद्रोही नहीं था। फिर भी, अमेरिकी पायलटों ने यह जानते हुए भी कि यह न केवल एक राष्ट्रीय बल्कि विश्व धरोहर है, उस पर बमबारी की। अच्छी बात यह रही कि नुकसान बहुत कम हुआ। फरवरी 1969 में, वियतनाम में अमेरिकी सेना के कमांडर जनरल क्रेटन अब्राम्स ने कंबोडिया के अंदर वियतनामी सैनिकों पर हमला करने की अनुमति मांगी। राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने तुरंत सहमति दे दी, और 18 मार्च 1969 को अमेरिकी B-52 विमानों ने कंबोडिया पर कई गुप्त बमबारी हमलों में से पहला हमला किया। 1970 में चुपके से शुरू की गई 'कार्पेट बॉम्बिंग' - जिसका मकसद वियतनाम में अमेरिका के दुश्मनों को कंबोडिया का बेस के तौर पर इस्तेमाल करने से रोकना था - ने अमेरिकी जनता को नाराज कर दिया और एक देश के तौर पर कंबोडिया को बर्बाद कर दिया।

पोल पॉट और उनके साथी विचारकों का मानना था कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के 'विज्ञान' ने उन्हें पूंजीवादी और साम्राज्यवादी दमन को खत्म करने के साधन दिए हैं। "सब कुछ जानने वाली" पार्टी कंबोडिया को कम्युनिस्ट आदर्श समाज (यूटोपिया) की ओर ले जाएगी। नरसंहार करने वाले अन्य विचारकों की तरह, खमेर रूज का इस भविष्य तक पहुँचने का रास्ता उन लोगों की लाशों से भरा था जो इस सोच में फिट नहीं बैठते थे।

1980 के दशक में पोल पॉट की सरकार ने अंकोर कॉम्प्लेक्स को व्यवस्थित रूप से नष्ट कर दिया। मंदिर की दीवारों से पत्थर की खूबसूरत नक्काशी को उखाड़ लिया गया और पड़ोसी देशों के एंटीक मार्केट में बहुत कम कीमत पर बेच दिया गया।

अंकोरवाट का मूल नाम 'ब्राह्म विष्णुलोक' था - भगवान विष्णु का पवित्र निवास। 'वाट' मंदिर के लिए थाई शब्द है, जो शायद 16वीं सदी में थेरवाद बौद्ध स्मारक बनने पर अंकोर के नाम के साथ जोड़ा गया होगा। अंकोर में जो भी चीज़ हटाई जा सकती थी, वह गायब हो गई है। यहां तक कि पत्थर की बड़ी मूर्तियों के सिर भी खजाना खोजने वालों ने काट दिए हैं।

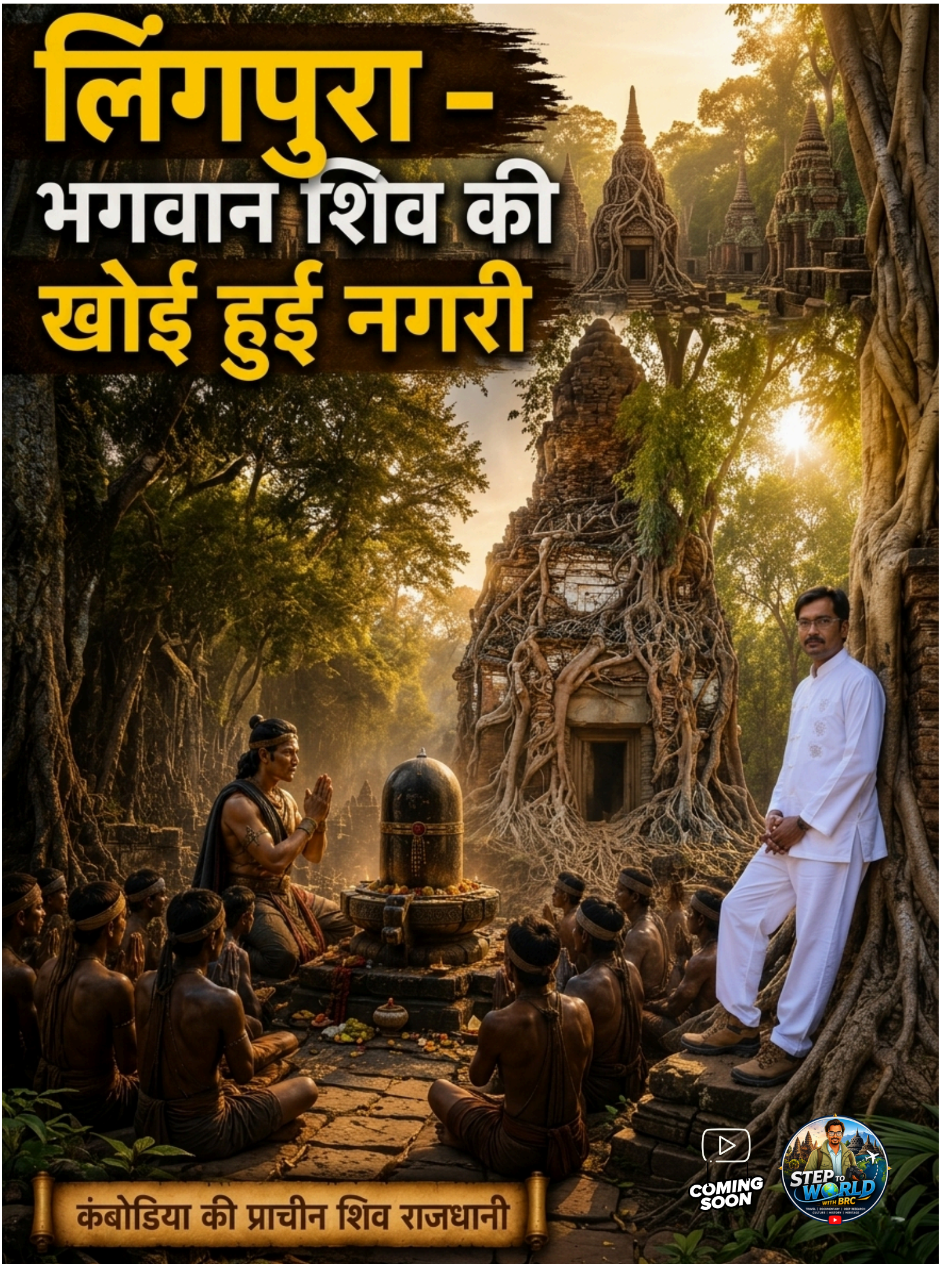
सबसे महत्वपूर्ण गैलरी, जिसे इसके संस्कृत नाम 'समुद्र मंथन' से भी जाना जाता है, को कुछ ज़्यादा नुकसान पहुँचा था, जिसके कारण ग्रासलिएर की टीम को इसे खोलना पड़ा। चार साल बाद भी इसे फिर से जोड़ने का काम चबूतरे के स्तर से आगे नहीं बढ़ सका। ...के पतन के साथ राष्ट्रवादी ताकतों के हाथों में नोम पेन्ह के चले जाने के कारण, ग्रासलिएर को जनवरी 1975 में आँखों में आँसू लिए अंकोर कैंप छोड़ना पड़ा।

आज अंकोरवाट आने वाले किसी भी व्यक्ति को यह अंदाज़ा नहीं होगा कि भारतीय विशेषज्ञों के काम शुरू करने से पहले इस गैलरी की हालत क्या थी। ASI के आने से पहले, यह गैलरी और इसकी बेशकीमती नक्काशी (bas-relief) पूरी तरह से मौसम की मार झेल रही थी। ASI के इंजीनियरों और दूसरे कर्मचारियों को इस गैलरी और उससे जुड़े दो गोपुरम (प्रवेश द्वार) और हॉल को ठीक करने और बिखरे हुए हिस्सों को फिर से जोड़ने में तीन साल (1988-91 के दौरान) तक लगातार काम करना पड़ा।



NASA से मिले हाथ से बने नक्शों, ज़मीनी सर्वे, हवाई फ़ोटोग्राफी और ज़मीनी रडार डेटा का विश्लेषण करके, सिडनी यूनिवर्सिटी के पुरातत्वविद् डेमियन इवांस और उनके साथियों ने इंसानों के बनाए एक हज़ार से ज़्यादा ऐसे तालाबों और कम से कम 74 ऐसे मंदिरों की पहचान की, जिनके बारे में पहले कोई जानकारी नहीं थी। रिसर्च से पता चलता है कि अंकोर एक ही हाइड्रोलिक सिस्टम से चलता था, जो मॉनसून की अनिश्चित बारिश के बावजूद पूरे नेटवर्क को लगातार पानी पहुँचाता था।

# लिंगपुरा - भगवान शिव की खोई हुई नगरी



कंबोडिया की प्राचीन शिव राजधानी

COMING  
SOON



# कहानी शिव नगरी की

खमेर इतिहास में 'कोह केर' का दौर कम जाना-पहचाना लेकिन दिलचस्प समय रहा है। उत्तरी कंबोडिया के घने जंगलों में बसा कोह केर, 10वीं सदी में कुछ समय के लिए खमेर साम्राज्य की राजधानी रहा। यह दौर अपनी शानदार वास्तुकला और उस समय की राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक स्थितियों की झलक के लिए जाना जाता है। हालाँकि अंगकोर की भव्यता के सामने यह दौर थोड़ा दब गया, लेकिन कोह केर के दौर की अपनी एक कहानी है जिसे पहचान मिलनी चाहिए।

उन दिनों इसे 'चोक गार्ग्यार' (शान का द्वीप) और 'लिंगपुरा' (लिंग-नगर) कहा जाता था। जयवर्मन के बेटे और उत्तराधिकारी हर्षवर्मन द्वितीय के शासनकाल में अंगकोर के रसूखदार लोगों ने फिर से अपना दबदबा बना लिया, और आखिरकार 944 में राजेंद्रवर्मन द्वितीय ने राजधानी को वापस अंगकोर स्थानांतरित कर दिया।

कोह केर का दौर, जिसे 'चोक गार्ग्यार' दौर भी कहा जाता है, लगभग 928 से 944 ईस्वी तक चला। इस दौरान, राजा जयवर्मन चतुर्थ ने अंगकोर से राजनीतिक केंद्र हटाकर कोह केर को खमेर साम्राज्य की राजधानी बनाया। राजधानी बदलने के पीछे न केवल नई राजधानी की चाह थी, बल्कि सत्ता की चाह भी थी, क्योंकि इससे राजा को स्थापित रसूखदार वर्ग से दूर अपनी सत्ता जमाने का मौका मिला।

कोह केर का दौर खमेर साम्राज्य की राजनीतिक जटिलताओं को दर्शाता है। कोह केर में राजधानी का स्थानांतरण राजा जयवर्मन चतुर्थ द्वारा सत्ता को केंद्रित करने और अंगकोर-स्थित कुलीन वर्ग के प्रभाव को कम करने के लिए उठाया गया एक सोच-समझकर किया गया कदम था। राजधानी के स्थानांतरण के साथ-साथ प्रशासनिक ढांचे का भी काफी पुनर्गठन किया गया, जिसका उद्देश्य शाही सत्ता को मजबूत करना था।

कोह केर में 8,000 हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में 180 से अधिक मंदिरों के अवशेष मौजूद हैं। यह संख्या अभी भी बढ़ रही है, क्योंकि कोह केर के आसपास, खासकर सैटेलाइट तस्वीरों में, लगातार और अवशेष मिल रहे हैं। लेकिन इस इलाके में बहुत सारे लैंडमाइन होने के कारण दूर-दराज की संरचनाओं का पता लगाना मुश्किल हो जाता है। हालाँकि, पर्यटकों की रुचि वाले मुख्य स्मारकों वाले पुरातात्विक क्षेत्र में बिना किसी जोखिम के घूमा जा सकता है।

सिएम रीप से आने पर सबसे पहला महत्वपूर्ण अवशेष 'प्रासत प्राम' मिलता है। इसका नाम इसके पांच टावरों के कारण पड़ा है। दो टावर घनी वनस्पति से ढके हुए हैं, और उनकी जड़ों ने इमारतों को जकड़ रखा है। उत्तर-पूर्वी टावर पर लिपटी 'स्ट्रैंगलर फिंग' (एक तरह का बरगद) की जड़ें 'जंगल के मंदिर' का सबसे शानदार उदाहरण हैं, जिसकी कोई कल्पना कर सकता है।

कोह केर सर्किट रोड पर अगली इमारत दाईं ओर 'प्रासत निएंग खमाऊ' है। इस मंदिर का नाम 'काली महिला का मंदिर' (Temple of the Black Lady) इसके लैटेराइट पत्थर के गहरे नीले-काले रंग की वजह से पड़ा। यह रंग ऑक्सीडेशन की प्रक्रिया का नतीजा है। इसका अकेला टावर लगभग 50 वर्ग मीटर के उस परिसर का हिस्सा है, जो लैटेराइट की दीवारों से घिरा हुआ है।

'प्रासत डमरेई' या 'हाथी मंदिर' एक बड़ा धार्मिक स्थल है। प्रासत के चबूतरे के कोनों पर बनी हाथियों की मूर्तियों के कारण इसका यह नाम पड़ा। सीढ़ियों के दोनों ओर बने शेर भी कम प्रभावशाली नहीं हैं। लेकिन पत्थर के आठ शेरों में से सिर्फ एक ही सीढ़ियों के पास अपनी मूल जगह पर मौजूद है।

अगर आप भगवान शिव के लिंगपुरा मंदिर को देखने के लिए कोह केर जाना चाहते हैं, तो आपको सियम रीप शहर से 90 मिनट की यात्रा करनी होगी। यह यात्रा जंगल की ओर जाती है और वहाँ आसानी से ट्रांसपोर्ट नहीं मिलता है, इसलिए आपको पर्सनल कैब किराए पर लेनी होगी या टूर बुक करना होगा। दोनों का खर्च कभी-कभी 70 से 120 डॉलर के बीच आता है और एंट्री टिकट 15 डॉलर का है, जिसका मतलब है कि इस जगह पर जाना सस्ता नहीं है।



प्राचीन खमेर शहर शाही ताकत के प्रतीक माने जाते थे। आम तौर पर इनमें शहर के बीचों-बीच एक पिरामिड के आकार का 'राजकीय मंदिर', एक बड़ा आयताकार जलाशय और मुख्य मंदिर व जलाशय के चारों ओर कई अन्य मंदिर होते थे। यह बात कोह केर पर भी लागू होती थी। यह शहर कई मंदिरों से मिलकर बना था जो 'राहल' (पाली भाषा में 'पवित्र तालाब') नाम के एक आयताकार मानव-निर्मित तालाब के चारों ओर बने थे। यह तालाब उत्तर-दक्षिण दिशा में फैला हुआ था। साथ ही, यहाँ 'प्रासत थोम' भी था, जिसमें पाँच स्तंभों वाला सीढ़ीदार पिरामिडनुमा मंदिर था जिसे पारंपरिक रूप से 'प्रांग' कहा जाता है; यह राजकीय मंदिर के पीछे स्थित था।

पूरा शहर ही एक शानदार शिव मंदिर जैसा था। यह पहचान 'प्रासत थोम' के पिरामिड जैसे आकार वाले 'प्रांग' (ऊँचे मंदिर) के शिखर पर स्थापित लिंग की गहन पूजा-अर्चना के प्रमाणों से बनी थी। कई छोटे मंदिर और तीर्थयात्रा का एक लंबा मार्ग विशेष रूप से इस सर्वोच्च लिंग से जुड़े हुए हैं। कोह केर में एक और महत्वपूर्ण धार्मिक अवधारणा देखने को मिलती है, जिसमें लिंग पर चढ़ाया गया और पवित्र हुआ जल 'राहल' (जलाशय) में प्रवाहित किया जाता था। यह जलाशय 'राहल' के चारों ओर स्थित प्रत्येक मंदिर से पवित्र जल एकत्र करने के लिए एक कुंड का काम करता था और इन मंदिरों को एक एकीकृत पवित्र परिवेश में जोड़ता था।





आस्था, संस्कृति और समृद्धि का अनूठा संगम

# चियांग माई का इन्थाखिन उत्सव

यह त्योहार मई के आखिर या जून की शुरुआत में होता है, इसकी तारीखें लूनर कैलेंडर से तय होती हैं।



थाईलैंड के उत्तरी शहर चियांग माई में हर वर्ष मनाया जाने वाला इन्थाखिन उत्सव स्थानीय लन्ना संस्कृति, धार्मिक आस्था और सामुदायिक एकता का एक महत्वपूर्ण पर्व है। सात दिनों तक चलने वाला यह उत्सव न केवल शहर की प्राचीन परंपराओं को जीवित रखता है, बल्कि लोगों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से भी जोड़ता है।

उत्सव की शुरुआत 'फोन सान हा' बुद्ध प्रतिमा की भव्य शोभायात्रा से होती है। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार यह प्रतिमा वर्षा, उर्वरता और समृद्धि का प्रतीक है। इसी कारण इसे 'पाँच लाख वर्षा की बूंदों का बुद्ध' भी कहा जाता है। शोभायात्रा के दौरान प्रतिमा को चियांग माई की प्रमुख सड़कों से निकाला जाता है, जहाँ हजारों श्रद्धालु दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। यात्रा के अंत में प्रतिमा को वापस वाट चेडी लुआंग मंदिर लाया जाता है और इसके साथ ही इन्थाखिन उत्सव का औपचारिक शुभारंभ होता है।

'इन्थाखिन' शब्द का अर्थ है 'इंद्र का स्तंभ'। लन्ना साम्राज्य की प्राचीन लोककथाओं के अनुसार बहुत समय पहले इस क्षेत्र के लोग सूखे, प्राकृतिक कठिनाइयों और दुष्ट शक्तियों से परेशान थे। संकट से घिरे लोगों ने देवताओं से प्रार्थना की। उनकी श्रद्धा और सदाचार से प्रसन्न होकर इंद्र देव ने उन्हें एक पवित्र स्तंभ प्रदान किया। माना जाता है कि इस स्तंभ में दैवी शक्ति विद्यमान थी, जो नगर की रक्षा करती थी, समय पर वर्षा लाती थी, फसलों की उन्नति सुनिश्चित करती थी और लोगों के बीच एकता बनाए रखती थी। तभी से यह स्तंभ चियांग माई की पहचान और संरक्षण का प्रतीक माना जाता है।

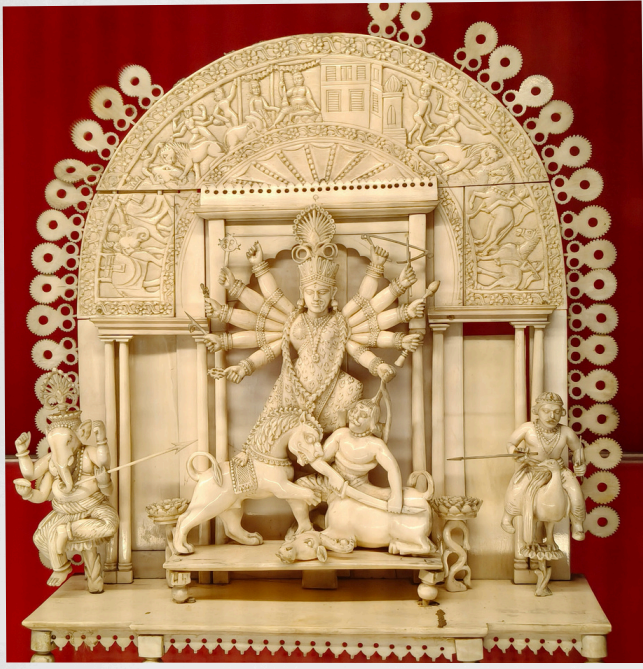
इन्थाखिन उत्सव का सबसे महत्वपूर्ण आकर्षण 'साई थान डोक' की परंपरा है। इसका शाब्दिक अर्थ है 'कटोरे में फूल अर्पित करना'। वर्षा ऋतु के आगमन पर चियांग माई के लोग मंदिर में एकत्र होते हैं और सुंदर पात्रों में फूल, मोमबत्तियाँ तथा अगरबत्तियाँ सजाकर पवित्र स्तंभ के आसपास अर्पित करते हैं। यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, जीवन की नश्वरता को स्वीकार करने और सामूहिक कल्याण की कामना का प्रतीक माना जाता है।



श्रद्धालु मानते हैं कि फूलों से सजे इन पात्रों को अर्पित करने से शहर और परिवार पर शुभ आशीर्वाद बना रहता है। पूजा के बाद कई लोगों को 'नाम मोन' अर्थात् पवित्र जल भी दिया जाता है। लोग इस जल को अपने घर ले जाकर छिड़कते हैं और विश्वास करते हैं कि इससे घर में सुख, शांति, सुरक्षा और सौभाग्य बना रहता है। उत्सव के दौरान दान-पुण्य का भी विशेष महत्व होता है। मंदिर परिसर में 108 युवा भिक्षुओं के दोपहर के भोजन के लिए दान एकत्र किया जाता है। स्थानीय समाज में इसे अत्यंत पुण्यदायी कार्य माना जाता है। बड़ी संख्या में लोग अपनी श्रद्धा के अनुसार योगदान देकर धार्मिक और सामाजिक जिम्मेदारी निभाते हैं। चियांग माई के मंदिरों में घूमते समय एक और दिलचस्प बात देखने को मिलती है—यहाँ कुबेर की प्रतिमाएँ भी स्थापित हैं। थाई समाज में कुबेर, जिन्हें अक्सर 'थाओ वेस्सुवन' या 'वैश्रवण' के नाम से जाना जाता है, अत्यंत सम्मान के साथ पूजे जाते हैं। उन्हें केवल धन और समृद्धि का देवता नहीं माना जाता, बल्कि वे सुरक्षा, सौभाग्य और छिपे हुए खजानों के रक्षक भी माने जाते हैं। स्थानीय लोगों का विश्वास है कि उनकी कृपा से घर और व्यापार में उन्नति होती है तथा नकारात्मक शक्तियों से रक्षा मिलती है।

आज के आधुनिक दौर में भी इन्थाखिन उत्सव चियांग माई की सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा बना हुआ है। यह उत्सव केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि लोगों को एक-दूसरे से जोड़ने, प्रकृति के प्रति सम्मान व्यक्त करने और समृद्ध भविष्य की कामना करने का अवसर भी है। रंग-बिरंगी सजावट, पारंपरिक लन्ना संस्कृति, मंदिरों की आध्यात्मिक आभा और श्रद्धालुओं की आस्था इस उत्सव को थाईलैंड के सबसे अनूठे सांस्कृतिक आयोजनों में शामिल करती है।

इन्थाखिन उत्सव इस बात का सुंदर उदाहरण है कि किस प्रकार सदियों पुरानी परंपराएँ आज भी समाज को जोड़ने, आशा जगाने और सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने का कार्य कर रही हैं।



राष्ट्रीय संग्रहालय  
बैंकॉक में माँ दुर्गा की  
प्रतिमा



बाली में केचक नृत्य के  
कलाकार



प्रम्बानन मंदिर और  
इंडोनेशिया के युवा



अंगकोर राष्ट्रीय  
संग्रहालय में शिव और  
स्कन्दा , दसवीं शताब्दी



yatramantran



11वीं शताब्दी – एक राजकीय विवाह जिसने बाली में हिंदू धर्म के प्रसार को नई दिशा दी

# राजा ऐरलंग्गा की माता का विवाह बाली के राजा उदयाना से

इस वैवाहिक संबंध ने जावा और बाली को जोड़ा तथा  
हिंदू धर्म, संस्कृति और परंपराओं के प्रसार को सशक्त बनाया।



जावा

बाली

10वीं शताब्दी के अंत में जावा की राजकुमारी महेंद्रदत्ता का विवाह बाली के राजा उदयाना वर्मदेव से हुआ। यह राजकीय गठबंधन जावा और बाली के बीच सांस्कृतिक एवं धार्मिक संबंधों का महत्वपूर्ण सेतु बना। इसी दंपति के पुत्र ऐरलंग्गा आगे चलकर जावा के महान शासकों में गिने गए। इतिहासकार मानते हैं कि इस वैवाहिक संबंध ने बाली में हिंदू परंपराओं और जावानी संस्कृति के प्रभाव को और सुदृढ़ किया।



बाली आज दुनिया के सबसे पसंदीदा लंबे समय तक रहने वाले पर्यटन स्थलों में से एक बन गया है, खासकर यूरोप, ऑस्ट्रेलिया और रूस के लोगों के लिए। इसकी सबसे बड़ी वजह है यहाँ का कम खर्च वाला जीवन, गर्म और सुहावना मौसम, समुद्र किनारे का लाइफस्टाइल, योग और वेलनेस कल्चर, और रिमोट काम के लिए अच्छा माहौल।

बाली' शब्द का अर्थ है "बलिदान", और ऐसा लगता है कि इस नाम का इस्तेमाल सबसे पहले 10वीं सदी ई. में राजा श्री केसरीवर्मा ने किया था।

इस द्वीप पर राजनीतिक व्यवस्था बनाने और यहाँ पहली बौद्ध-प्रेरित सरकार बनाने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है। जहाँ एक तरफ शुरुआती भारतीय व्यापारी ज्यादातर जावा और सुमात्रा के साथ व्यापार करते थे, वहीं भारतीय हिंदू धर्म, संस्कृति और खान-पान का प्रभाव लगभग 900 ई. तक बाली तक भी पहुँच गया था। चीनी जहाज़ भी अक्सर बाली आते थे और अपने साथ दाओवाद/बौद्ध धर्म लेकर आते थे। 9वीं सदी का भारतीय हिंदू समाज शायद नौ हिंदू संप्रदायों पर आधारित था: पाशुपत, भैरव, शैव सिद्धांत, वैष्णव, बौद्ध, ब्रह्म, ऋषि, सौर और गाणपत्य। इसी समय इनका प्रसार जावा में भी शुरू हुआ होगा। हिंदू धर्म जावा से (जहाँ यह भारत से आया था) लगभग 11वीं सदी में बाली पहुँचा। इसे जावा के सबसे प्रमुख राजाओं में से एक—राजा एयरलंगा—ने वहाँ पहुँचाया था; या ज्यादा सटीक रूप से कहें तो, उनकी माँ की वजह से, जिन्होंने बाली के राजा उदयना से विवाह किया था।

अगर आपको बाली की संस्कृति में गहरी दिलचस्पी है, तो आपको 'केचक डांस' जरूर देखना चाहिए। असल में, केचक डांस कोई प्राचीन नृत्य नहीं है जो शाही जमाने से चला आ रहा हो। केचक डांस एक 'संद्रतारी' (नाटकीय कला) है, जो बाली के 'संग हयांग' अनुष्ठान से प्रेरित है। यह समुदाय और देवताओं या पूर्वजों की आत्माओं के बीच आध्यात्मिक संवाद का एक माध्यम है। अचेत अवस्था में, वे नृत्य करते हैं, और उनके साथ पूजा के गीत और 'तेताबुहान' (वाद्य यंत्रों) की संगत होती है।

केचक डांस हिंदू महाकाव्य रामायण की कहानी कहता है—खास तौर पर वह प्रसंग, जिसमें राजकुमार राम की पत्नी सीता का अपहरण राक्षस राज रावण कर लेता है।

लेकिन पर्यटन के इस तेजी से बढ़ते दौर ने कई बड़ी समस्याएँ भी पैदा कर दी हैं। सबसे बड़ी समस्या है जमीन और मकानों की बढ़ती कीमतें। विदेशियों की बढ़ती मांग के कारण विला और जमीन के दाम कई गुना बढ़ गए हैं।

बाली की दूसरी बड़ी समस्या है कचरा और प्लास्टिक प्रदूषण। पर्यटन और बढ़ती आबादी के कारण समुद्र तटों, नदियों और सड़कों पर प्लास्टिक कचरा तेजी से बढ़ रहा है। बरसात के मौसम में समुद्र किनारों पर टनों कचरा जमा हो जाता है।

फिर भी, कम खर्च वाला लाइफस्टाइल, गर्म मौसम, हिंदू-बालिनी संस्कृति, खूबसूरत समुद्र तट और आरामदायक माहौल की वजह से बाली आज भी दुनिया के सबसे आकर्षक लंबे समय तक रहने वाले पर्यटन स्थलों में गिना जाता है। Bali इंडोनेशिया का सबसे प्रसिद्ध पर्यटन द्वीप है, जिसकी आबादी लगभग 44-45 लाख है। यहाँ की लगभग 87% जनसंख्या हिंदू धर्म का पालन करती है, इसलिए इसे दुनिया का सबसे बड़ा हिंदू बहुल पर्यटन द्वीप भी माना जाता है।

वर्ष 2024 में बाली में लगभग 63.3 लाख विदेशी पर्यटक आए, जो कोविड से पहले के रिकॉर्ड से भी अधिक है। पर्यटन से बाली को लगभग 107 ट्रिलियन इंडोनेशियाई रुपिया (करीब ₹57,000 करोड़ भारतीय रुपये) की विदेशी आय हुई।

बाली के मंदिरों और पवित्र स्थलों पर स्थापित द्वारपाल प्रतिमाएँ सुरक्षा और संरक्षण का प्रतीक हैं। माना जाता है कि वे नकारात्मक शक्तियों को दूर रखकर पवित्र परिसर की रक्षा करती हैं। उनकी प्रभावशाली आकृति शक्ति, साहस और आध्यात्मिक संतुलन का संदेश देती है।"



## प्रम्बानन - इंडोनेशिया का अपना सनातन युग



प्रम्बानन मंदिर युग्याकार्ता से करीब 17 किमी दूर है, जहाँ टैक्सी, गोजेक या बस (रूट 1A) से 30-45 मिनट में आसानी से पहुँचा जा सकता है।"

प्रम्बानन मंदिर का निर्माण मातरम साम्राज्य के समय हुआ था, मताराम साम्राज्य—जिसे 'मेदंग साम्राज्य' के नाम से भी जाना जाता है—जावा का एक हिंदू-बौद्ध राज्य था, जिसने 8वीं से 10वीं शताब्दी के मध्य तक निरंतर उन्नति की। शुरुआत में मध्य जावा में सोलो नदी के किनारे केंद्रित और बाद में पूर्वी जावा में स्थानांतरित, इसकी स्थापना राजा संजय ने की थी और विभिन्न समयों पर यह बौद्ध शैलेंद्र राजवंश के शासन के अधीन रहा। अपने इतिहास के अधिकांश भाग में, मताराम गहन चावल कृषि पर अत्यधिक निर्भर रहा और बाद में समुद्री व्यापार के माध्यम से इसने अतिरिक्त धन अर्जित किया।

प्रंबानन' नाम संभवतः संस्कृत के शब्द 'ब्रह्मवनम्' से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है—'ब्रह्मा का वन' अथवा 'परमेश्वर का वन'। जब साम्राज्य की राजधानी पूर्वी जावा स्थानांतरित हो गई, तब 'प्रंबानन' को त्याग दिया गया; इसके बाद 'मेरापी' पर्वत के ज्वालामुखी विस्फोटों के कारण इस मंदिर को भारी क्षति उठानी पड़ी। नौवीं शताब्दी का यह मंदिर, जो आज भी पूर्णतः सुरक्षित अवस्था में है, 1966 ईस्वी में एक किसान द्वारा संयोगवश खोजा गया था। 'मेरापी' पर्वत के ज्वालामुखी विस्फोट के बाद, यह मंदिर छह मीटर की गहराई में ज़मीन के नीचे दब गया था। इस मंदिर की ताखों में आज भी दुर्गा, गणेश और अगस्त्य की प्रतिमाएँ मौजूद हैं। इसके भीतर एक पूर्ण लिंग और योनि स्थित है, जो इसके तांत्रिक झुकाव की ओर संकेत करता है।

प्रम्बानन मंदिर परिसर में मूल रूप से 240 मंदिर संरचनाएँ शामिल थीं; जो प्राचीन जावा की हिंदू कला और वास्तुकला की भव्यता का प्रतीक हैं, और जिन्हें इंडोनेशिया के शास्त्रीय काल की एक उत्कृष्ट कृति (masterpiece) भी माना जाता है। प्रम्बानन मंदिर केवल पूजा का स्थान नहीं था। कुछ शोधकर्ताओं का मानना है कि इसके निर्माण में भारत के प्राचीन मंदिर वास्तु सिद्धांत 'मंडल' का उपयोग किया गया था। हिंदू परंपरा में मंडल केवल एक ज्यामितीय आकृति नहीं, बल्कि ब्रह्मांड की संरचना का प्रतीक माना जाता है। इसी सिद्धांत के आधार पर मंदिरों की दिशा, आकार और संरचना निर्धारित की जाती थी।

कई विद्वानों का सुझाव है कि प्रम्बानन मंदिर का संबंध सूर्य और चंद्रमा की खगोलीय गतियों से भी हो सकता है। मंदिर की बनावट और उसकी दिशा को देखकर यह संभावना व्यक्त की गई है कि यहाँ चंद्रमा के विशेष चरणों और आकाशीय घटनाओं का अवलोकन किया जाता रहा होगा।

यदि यह सिद्धांत सही है, तो प्रम्बानन केवल एक धार्मिक केंद्र नहीं था, बल्कि ऐसा स्थान भी था जहाँ प्राचीन जावा के लोग आस्था के साथ-साथ खगोल विज्ञान का अध्ययन करते थे। यह हमें याद दिलाता है कि उस युग में धर्म, विज्ञान और प्रकृति को अलग-अलग नहीं, बल्कि एक ही ज्ञान परंपरा का हिस्सा माना जाता था।"

मताराम साम्राज्य का सबसे प्राचीन अभिलेख 732 ई. का 'चंगल शिलालेख' है, जो मागेलोंग के निकट प्राप्त हुआ था। शिलालेख के अनुसार, जावा पर राजा 'सन्न' का शासन अत्यंत बुद्धिमत्तापूर्ण था, किंतु उनकी मृत्यु के उपरांत वहाँ अराजकता फैल गई।

इंडोनेशियाई शैव धर्म में, शिव का लोकप्रिय नाम 'बटारा गुरु' रहा है, जो संस्कृत शब्द 'भट्टारक' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "महान स्वामी"। उन्हें एक दयालु आध्यात्मिक शिक्षक के रूप में माना जाता है; इंडोनेशियाई हिंदू ग्रंथों में उन्हें सभी गुरुओं में प्रथम बताया गया है। बटारा गुरु देवताओं के राजा हैं, जो विश्व व्यवस्था को नियंत्रित और सृजित करते हैं।

बौद्ध धर्म में भगवान शिव को कई तरह से वर्णित किया गया है, महायान बौद्ध धर्म में, शिव को 'महेश्वर' के रूप में चित्रित किया गया है, जो 'अकनिष्ठ देवलोक' में निवास करने वाले एक देवता हैं। थेरवाद बौद्ध धर्म में, शिव को 'ईशान' के रूप में दर्शाया गया है, जो 'कामधातु' के छठे स्वर्ग में 'शक्र इंद्र' के साथ निवास करने वाले एक देवता हैं। वज्रयान बौद्ध धर्म में, शिव को 'महाकाल' के रूप में चित्रित किया गया है, जो धर्म की रक्षा करने वाले एक बोधिसत्व हैं।

प्रम्बानन मंदिर सबसे पहले लगभग 850 ईस्वी में 'रकाई पिकातान' द्वारा एक मंदिर का निर्माण करवाया गया था, और बाद में 'माताराम साम्राज्य' के संजय वंशीय राजाओं—'लोकपाल' और 'बालितुंग महा संबू'—द्वारा इसका व्यापक विस्तार किया गया। शिव मंदिर की रेलिंग (बाड़) के शीर्ष पर स्थित कलशों में से एक पर, लाल रंग से लिखा हुआ एक छोटा सा लेख मिला, जिसमें "पिकातान" नाम अंकित था; यह इस बात की पुष्टि करता है कि मंदिर के निर्माण कार्य को शुरू करवाने का श्रेय राजा पिकातान को ही जाता है।

इस मंदिर परिसर का संबंध 856 ईस्वी के 'शिवगृह शिलालेख' से है, जिसे राजा लोकपाल द्वारा जारी किया गया था। इस शिलालेख में एक ऐसे शिव मंदिर परिसर का वर्णन किया गया है, जो वर्तमान 'प्रम्बानन' मंदिर जैसा ही प्रतीत होता है। इस शिलालेख के अनुसार, शिव मंदिर का उद्घाटन 12 नवंबर 856 ईस्वी को किया गया था। इसी शिलालेख के अनुसार, इस मंदिर का निर्माण भगवान शिव के सम्मान में करवाया गया था, और इसका मूल नाम 'शिव-गृह' (शिव का घर) अथवा 'शिव-आलय' (शिव का धाम) था।



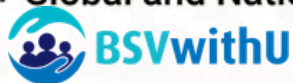
# Together We Empower, Educate & Transform

Join Will India Change Foundation

BECOME A  
MEMBER



10+ Global and National Brands Backing Us



**25+**

Cities Reached



**75+**

Media Features



**5**

India Book of Records



[www.willindiachange.org](http://www.willindiachange.org)



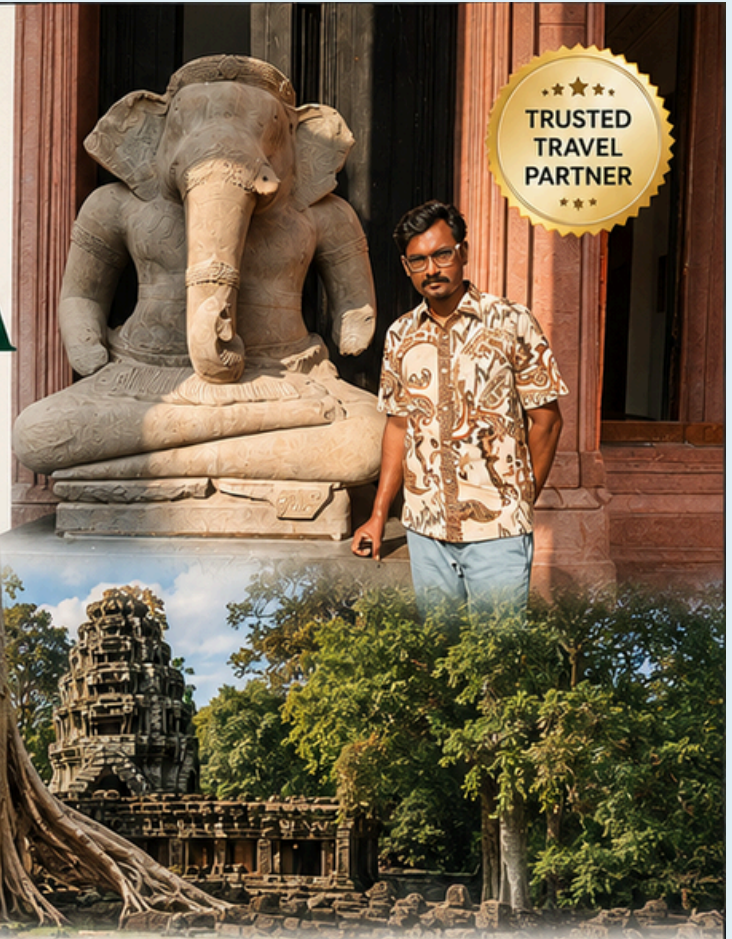
[willindiachangefoundation@gmail.com](mailto:willindiachangefoundation@gmail.com)



7350851852



# यात्रा आमंत्रण EXPLORE SOUTHEAST ASIA WITH THE EXPERTS



## TRAVEL BEYOND TOURISM

Curated journeys by India's leading Hindi travel magazine and experienced travel journalists

“  
देखा है,  
समझा है,  
अब आपको  
दिखाएंगे  
”



## JOURNEYS ACROSS ICONIC DESTINATIONS



INDONESIA



CAMBODIA



THAILAND



VIETNAM



MALAYSIA



PHILIPPINES

## WHY TRAVEL WITH YATRA AAMANTRAN



12+ Years  
in Travel  
Journalism



19 Editions of  
Yatra Aamantran  
Magazine



Cultural Content  
Creator for  
Doordarshan



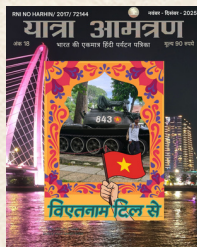
Member of  
Outbound Tour Operators  
Association of India (OTOAI)



Ground Experience  
Across Southeast  
Asia



Trusted Travel  
Package  
Partner



## यात्रा आमंत्रण

भारत की एक मात्र हिंदी  
पर्यटन पत्रिका



WhatsApp  
7350851852

## PLAN YOUR NEXT JOURNEY WITH CONFIDENCE

- Well researched itineraries
- Authentic experiences
- Comfort & safety
- Memories for a lifetime

WHERE TRAVEL JOURNALISM MEETS REAL TRAVEL EXPERIENCE



WEBSITE  
[www.yatramantran.com](http://www.yatramantran.com)



INSTAGRAM  
[@yatramantran](https://www.instagram.com/yatramantran)



YOUTUBE  
[steptoworldwithBRC](https://www.youtube.com/channel/UCstcptoworldwithBRC)



MAIL ID  
[yatraamantran@gmail.com](mailto:yatraamantran@gmail.com)